ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

REVIEW OF RESEARCH

जनसंचार कल आज और कल

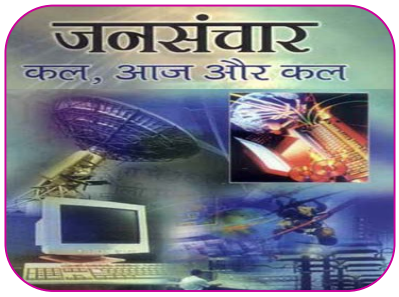

प्रा.डॉ. गंगाधर धुळप्पा बिराजदार
हिंदी विभाग प्रमुख, दयानंद कला एवं शास्त्र महाविद्यालय, सोलापुर.

प्रस्तावना :

जनसंचार यह शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Mass Communication' का हिंदी पर्यायी शब्द है। अंग्रेजी भाषा का 'Mass Communication' यह शब्द लॅटीन भाषा के Communico' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है – किसी वस्तु या विषय का सबके लिए साझेदारी । दूसरे शब्दो में Communication' से तात्पर्य है – किसी बात को आगे बढाना। Communication' के लिए हिंदी में 'संचार' यह शब्द प्रयुक्त है। 'संचार' शब्द संस्कृत के 'चर' धातु से बना है, जिसका अर्थ है – चलाना। सामान्यतः संचारण क्रिया का अर्थ है – अपने विचारों, भावनाओ तथा सूचना आदि का आदान–प्रदान करना। संचारण क्रिया से संचार यह संज्ञा बनती है। जनसंचार का अर्थ स्पष्ट करते हुए अनेक विव्दानों ने उसे परिभाषित करने का प्रयास किया है।

डॅनिस मैकबेल – 'संचार' को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेशों के प्रेषण के रूप में स्वीकार किया जा सकता है, कोई भी व्यक्ति संचार के बिना जी नहीं सकता।

रेड फिल्ड – 'संचार' तथ्यों तथा विचारधाराओं के मानव विनिमय का विस्तृत क्षेत्र है।

संक्षेप में तथ्यों, विचारों, भावनाओं आदि की अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति ही जनसंचार का स्वरूप है। जनसंचार की प्रक्रिया मैं संदेश, प्रेषक, संकेत भाव माध्यम, प्राप्तकर्ता निहित भाव को समझना तथा क्रियान्वयन आदि महत्वपूर्ण तत्व होते हैं। माध्यम यह संचार का अंत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है, जिसके जरिए प्रेषक अपने संदेश को प्राप्त कर्ता के पास पहुॅचा सकता है। इन्हीं माध्यमों द्वारा प्राप्तकर्ता संदेशों को प्राप्त कर उन्हें समाझता है और क्रियान्वयन करता है। इसलिए जनसंचार की इस विशाल प्रक्रिया में माध्यम एक महत्वपूर्ण तत्व है। संप्रेषण के लिए जिन आयामों या उपकरणों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'जनसंचार माध्यम' कहते हैं।

मनुष्य 'संचार' के लिए आदिकाल से ही किसी न किसी साधन या माध्यम का प्रयोग करता हुआ आया है। प्रारंभ में शारीरिक हावभाव, संकेत से होते–होते भाषा संचार का माध्यम बनी। कालानुरूप संचार माध्यमों में विभिन्न रूपों का अविष्कार दिखाई देता है। वर्तमान में जनसंचार के माध्यमों में कई प्रकार के अद्यतनम माध्यम दिखाई देते हैं। इन्हें दो भागों में विभाजित किया जा सकता है – 1) परंपरागत माध्यम – जैसे वार्ता, कथा मेले, उत्सव, लोकगीत, शिलालेख लोकनाट्य, कथाएँ आदि। 2) आधुनिक माध्यम – डाक प्रणाली, मुद्रण माध्यम

व इलेक्ट्रॉनिक माध्यम आदि। मुद्रण माध्यम के अंतर्गत समाचार पत्रिकाएँ, मासिक साप्ताहिक आदि आते हैं। इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के और दो भेद किए जाते हैं – श्राव्य माध्यम और दृश्य एवं श्राव्य माध्यम। श्राव्य माध्यम के अंतर्गत रेडिओ, सेल्युलर, टेलिफोन, रेडिओ पेजिंग, टेली प्रिंटर का समावेश होता है तो दृश्य एवं श्राव्य माध्यम के अंतर्गत टेलीविजन, फॅक्स, कंप्यूटर, फिल्म, वीसीआर तथा इंटरनेट का समावेश होता है। उक्त कई अधुनातन माध्यमों में से कुछ प्रमुख माध्यमों पर प्रकाश डालेंगे–

1) पेजर :

यह आयाताकाकर 3/12 इंच लम्बा तथा 2/12 इंच चौडा यंत्र होता है, जो आनेवाले संदेशों को लिखित रूप में स्क्रीन पर दर्शाता है। यह बेतार कनेक्शन पेपर बॉक्स से जुडा होता है। संदेश आने पर यह पीप–पीप की ध्वनि करता है। बटन दबाकर संदेश प्राप्त किया जा सकता है। भारत में इसका प्रयोग 1982 ई में एशियन गेम्स के दौरान पहली बार किया गया।

2) फॅक्स :

फॅक्स का अविष्कार 1866 ई. में जिमोवान्नी कोसली ने किया था। इसका उपयोग मुख्य रूप से दस्तावेजों को भेजने के लिए किया जाता है। टेलिफोन नेटवर्क के व्दारा इस उपकरण की सहायता से किसी भी दस्तावेजों की ठीक उसी तरह जिस प्रकार हम किसी दस्तावेज की झेरॉक्स प्राप्त करते हैं।

3) ई–मेल :

आधुनिक जनसंचार माध्यमों मे ई–मेल अत्यंत महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय साधन है। इंटरनेट व्दारा ई–मेल से संचार दिन –ब – दिन बढता जा रहा है। जिसके माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने में सूचना संदेश पहुँचाया जाता हैं। संदेशो को तीव्रता के साथ व्यक्ति या व्यक्ति समूहों को संदेश संप्रेषित किया जा सकता है।

4) समाचार पत्र :

आज देश का हर पढा–लिखा व्यक्ति समाचार पत्र पढता है। घटनाओं की जानकारी, मनोरजन, विज्ञापन आदि माध्यम से समाचार पत्र आज एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य कर रहा है। भारत में अंग्रेजी के आगमन के साथ ही समाचार पत्रों का अविष्कार हुआ। 1780 ई.में पहला समाचार प्रकाशित हुआ। 2007ई. तक भारत के पंजीकृत पत्रिकाओं की संख्या 65032 थी। 1822 ई. से प्रकाशित हो रहा 'बॉम्बे समाचार' देश का सबसे पुराना अखबार है।

5) रेडिओ : –

रेडिओ जनसंचार का महत्वपूर्ण श्राव्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है। यह आकाश में ध्वनि तरंगों में समाचारों एवं सूचनाओं को प्रसारित करता है। इसलिए इसे 'आकाशवाणी' भी कहा जाता है। भारत में रेडिओ प्रसारण की शुरूआत 1920 के दशक में हो गई। 1923 ई. सन में रेडिओ क्लब ऑफ बम्बई व्दारा पहला कार्यक्रम प्रसारित किया गया। आकाशवाणी 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' के लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए सूचना, शिक्षा और मनोरंजन का कार्य सफलतापूर्वक कर रही है। प्राथमिक चैनल, राष्ट्रीय चैनल, विविध भारती, एफ.एम. आदि चैनलों के व्दारा आकाशवाणी सेवाएँ समर्पित कर रही है।

6) दूरदर्शन :–

जनसंचार का महत्वपूर्ण दृक–श्राव्य माध्यम है। दूरदर्शन के माध्यम से विश्व के किसी भी क्षेत्र में घटित होनेवाली घटना, सूचना तथा मनोरंजन परक कार्यक्रमों को हम भी देख सकते हैं और सुन भी सकते हैं। इसलिए यह जनसंचार का सबसे प्रभावशाली साधन बन पडा है। आज देश में दूरदर्शन के 64 केंद्र हैं। दूरदर्शन के 25 चैनलों से कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। समाचार, सामाजिक विषय, विज्ञान, कला, नृत्य नाटक, फीचरफिल्म आदि के विभिन्न कार्यक्रम दूरदर्शन व्दारा प्रसारित किए जाते हैं। डी.डी. इंडिया, डी.डी. स्पोर्ट, डी. डी. न्यूज आदि महत्वपूर्ण चैनलों को अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषाओं के अनेक चैनलों व्दारा दूरदर्शन सूचना, तथ्य, विचार, एवं भावनाओं को प्रेषित करनेवाला महत्वपूर्ण जनसंचार माध्यम है।

7) फिल्म या सिनेमा :–

दृक–श्राव्य साधनों में से एक सिनेमा या फिल्म जनसंचार का एक सशक्त माध्यम बन गया है। भारत में फिल्मों की शुरूआत मूक फिल्मों से हुई। 1813 ई. में दादासाहेब फालके ने 'राजा हरिश्चंद्र' नामक मूक फिल्म बनाई। तब से लेकर आज तक हजारों फिल्में देश मे बनी है। भारत में सर्वाधिक फिल्में बनती है। फिल्म एक कलात्मक जनसंचार माध्यम है। इसमें लेखन, अभिनय, गायन, संगीत, नृत्य आदि के माध्यम से जनता मे महत्वपूर्ण संचार को प्रेषित किया जाता है।

8) कंप्यूटर और इंटरनेट :–

कंप्यूटर एक ऐसी इलेक्ट्रानिक युक्ति है, जो दिए गए निर्देशन समूह के आधार पर सूचनाओं को संसाधित करती है। आज का युग कंप्यूटर का युग बन गया है। आज केवल पढा–लिखा होता ही जरूरी नहीं है, बल्कि कंप्यूटर की साक्षरता अर्थात कंप्यूटर का ज्ञान होना भी आवश्क है। भारत में कंप्युटर का आगमन 1955 ई. में हुआ। कंप्यूटर में अनेक प्रकार के आकडों, सूचनाओं को संसाधित किया जा सकता है।

कंप्यूटर के अंतर्गत ही आनेवाला इंटरनेट एक अत्यधिक बलशाली एवं गतिशील संचार माध्यम है। यह एक बहुत से कंप्युटरो का जाल होता है, जो उपग्रहो, केबल तंतू प्रणालियों तथा टेलिफोनों के व्दारा एक –दूसरे से जुडे होते हैं। इंटरनेअ का महत्व दिन–ब–दिन बढता जा रहा है। इंटरनेट की शुरूआत 1985 ई. को अमेरिका के प्रतिरक्षा विभाग में हुई थी। आज इंटरनेट संमग्र विश्व में व्याप्त है। इंटरनेट के माध्यम से बैकींग, व्यापार, सूचनाओं का आदान–प्रदान, विज्ञापन एवं विपणन किया जाता है। ई–मेल इंटरनेट का ही एक भाग है।

9) सेल्युलर फोन :–

मोबाईल या सेल्यूलर फोन जनसंचार एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण माध्यम बनता जा रहा है। इसके माध्यम से सूचनाओं एवं संदेशों को संप्रेषित किया जा सकता है। इसलिए यह साधन उपयुक्त एवं लोकप्रिय बनता जा रहा है। आज हर किसी के पास मोबाईल है। यही इसकी लोकप्रियता एवं उपयुकतता का प्रमाण है।

उपर्युक्त साधनों के अतिरिक्त प्रत्यक्ष वार्ता, रेडिओ पेजिंग प्रणाली, डाक प्रणाली, टेलिफोन, चार्ट, ग्राफ बुलेटिन बोर्ड, विज्ञापन, आदि अनेक जनसंचार के माध्यम है, जिसके व्दारा सूचनाओं, तथ्यों, ज्ञान, विचार, दृष्टिकोणों आदि को संप्रेषित किया जा सकता है।

निष्कर्ष :–

जनसंचार माध्यमों का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। इन माध्यमों ने मानव जीवन को गहन रूप से प्रभावित किया है। जनसंचार के ये माध्यम मानव जीवन के महत्वपूर्ण अंग बनते जा रहे हैं। उद्योग, वाणिज्य, ज्ञान, विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों से इन माध्यमों की मॉग बढती ही जा रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) हिंदी प्रयोजन मूलक भाषा रूप – डॉ माधव सोनटक्के
2) प्रयोजनमूलक हिंदी अधुनातन आयाम – डॉ. अंबादास देशमुख
3) मीडिया और साहित्य – डॉ. योगेंद्रप्रताप सिंह
4) पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम –संजीव भानावत
5) भारतीय प्रसारण विविध आयाम – डॉ. मधुकर गंगाधर
6) संचार के जनसंचार – रूपचंद गौतम